test

01 January 1990, Monday
01:00:00 AM(5.5)
New Delhi, India

रेखांश	: 77.12E
अक्षांश	: 28.36N
साम्पातिक काल	: 7:19:34
स्थानीय मानक समय	: 00:38:48
अयनांश	: 23.72 एन सी लाहिरी

लग्न	: कन्या
लग्नपति	: बुध
राशी	: कुम्भ
राशी स्वामी	: शनि
नक्षत्र	: धनिष्ठा
नक्षत्र स्वामी	: मंगल
चरण	: 2
नाड़ी	: मध्य
नाड़ी पद	: आदि
तिथि	: चतुर्थी शुक्ल
पाया	: स्वर्ण
सूर्य सिद्धांत योग	: वज्र
करण	: विष्टि
वर्ण	: शूद्र
वर्ण	: शूद्र
वश्य	: जलचर
योनि	: सिंह(स्त्री.)
विहग	: वायस
गण	: राक्षस
प्रथम अक्षर	: ग, गी, गू, गे
सूर्य राशि	: धनु

लग्न कुन्डली

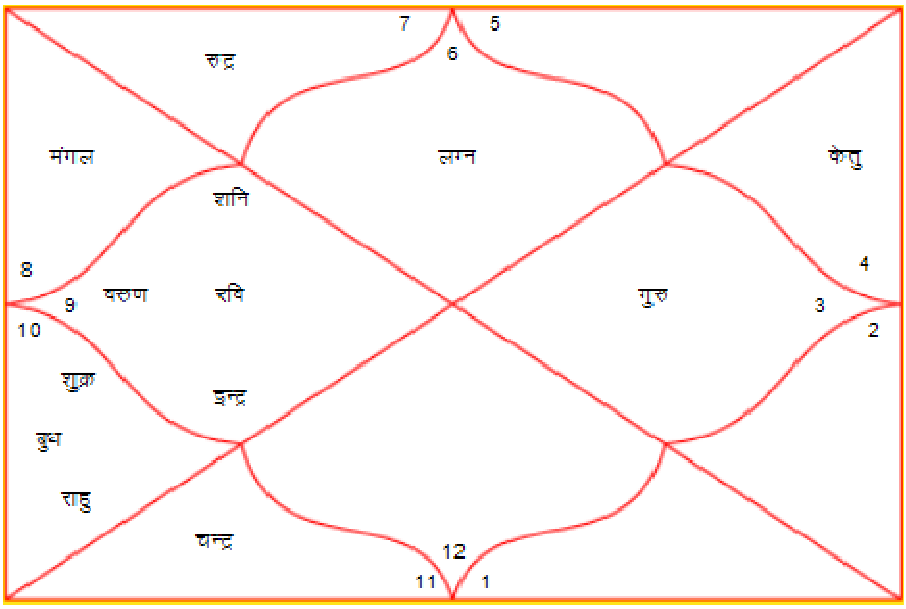

लग्न कुण्डली में मांगलिक योग नहीं है

जन्म के समय ग्रहों की स्थिति

ग्रह	दिशा	राशी	स्वामी	डिग्री	नक्षत्र–पद	स्वामी
लग्न		कन्या	बुध	23:46:34	चित्रा–1	मंगल
रवि	मार्गी	धनु	गुरु	16:23:45	पूर्वाषाढ़ा–1	शुक्र
बुध	वक्री	मकर	शनि	2:6:43	उत्तराषाढ़–2	रवि
शुक्र	वक्री	मकर	शनि	12:35:5	श्रवण–1	चन्द्र
मंगल	मार्गी	वृश्चिक	मंगल	15:47:57	अनुराधा–4	शनि
गुरु	वक्री	मिथुन	बुध	11:31:28	अरिद्रा–2	राहु
शनि	मार्गी	धनु	गुरु	21:51:34	पूर्वाषाढ़ा–3	शुक्र
चन्द्र	मार्गी	कुम्भ	शनि	0:19:41	धनिष्ठा–3	मंगल
राहु	वक्री	मकर	शनि	24:45:17	धनिष्ठा–1	मंगल
केतु	वक्री	कर्क	चन्द्र	24:45:17	आश्लेषा–3	बुध
इन्द्र	मार्गी	धनु	गुरु	12:1:38	मूला–4	केतु
वरुण	मार्गी	धनु	गुरु	18:17:43	पूर्वाषाढ़ा–2	शुक्र
रुद्र	मार्गी	तुला	शुक्र	23:21:27	विशाखा–2	गुरु

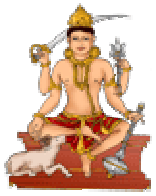

निष्कर्ष

मांगलिक योग कहां उपस्थित है:

लग्नकुन्ड	चंद्र	शुक्र	नवांश	क्या मांगलिक योग निष्क्रिय है?
~~नहीं~~	~~नहीं~~	~~नहीं~~	~~हां~~	हां

आपकी जन्मपत्री में मांगलिक योग उपस्थित है लेकिन सौभाग्य से कुछ ऐसे शुभ योग बन रहे हैं जो मंगल को आपके अनुकूल कर इस योग को निष्क्रिय कर रहे हैं. आपके ऊपर मांगलिक योग प्रभावी नहीं है और आपको इस विषय में चिंतित होने की कोई आव्यशकता नहीं है.

नवांश कुन्डली

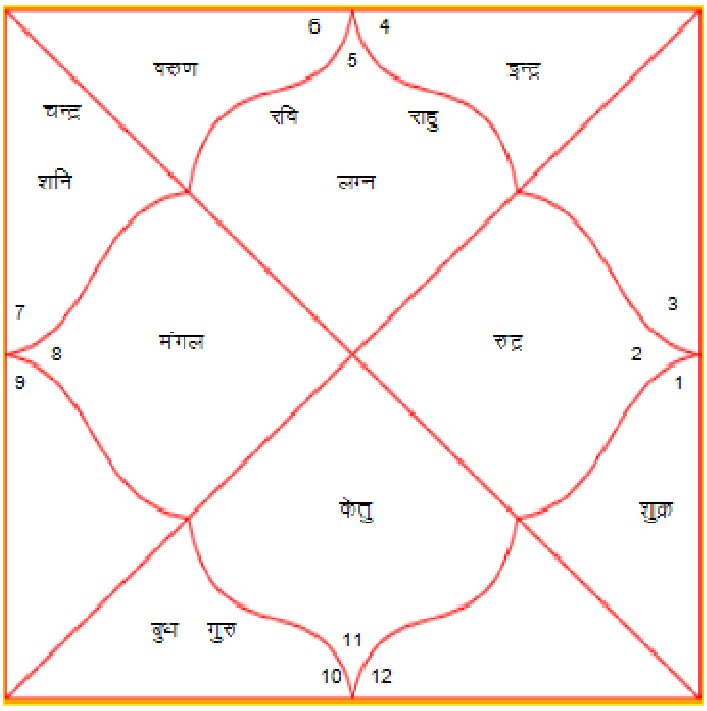

नवांश कुण्डली में मांगलिक योग है

चंद्र कुण्डली

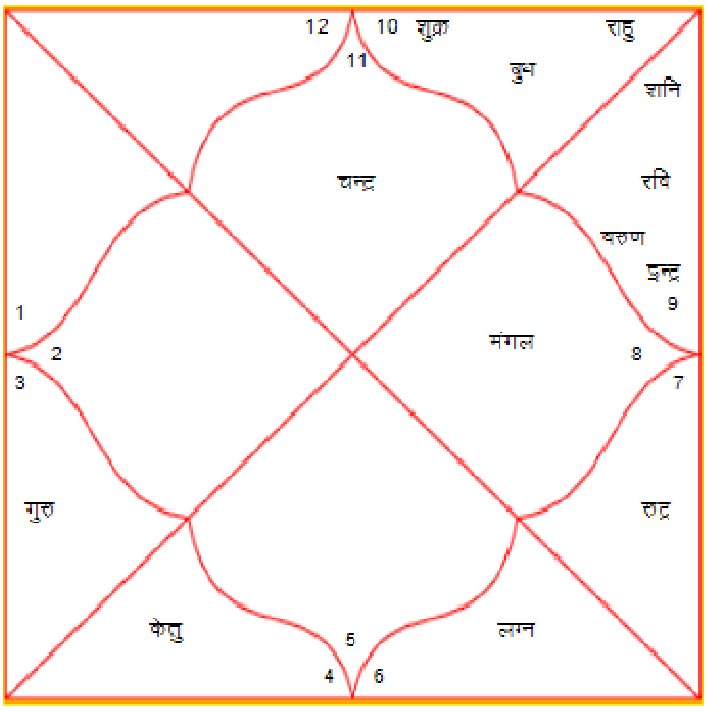

चन्द्र कुण्डली में मांगलिक योग नहीं है

शुक्र कुण्डली

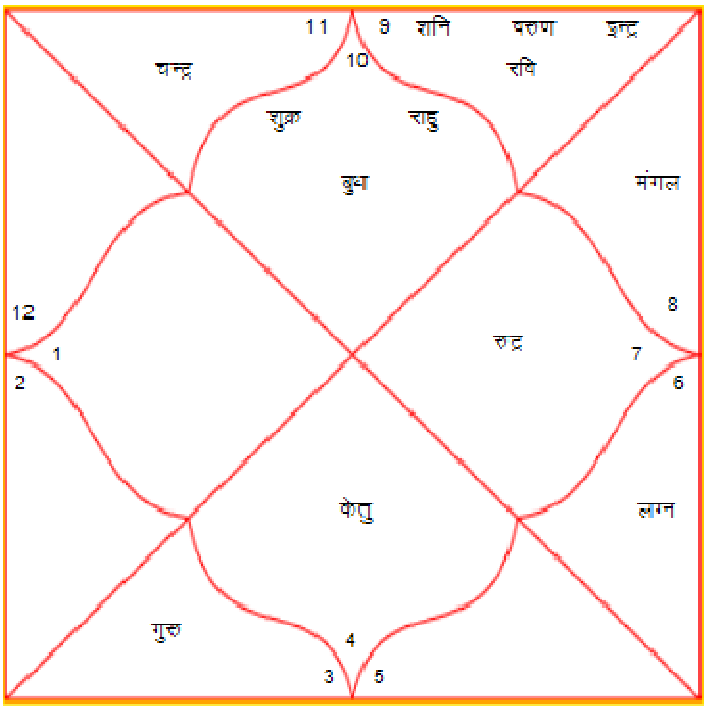

शुक्र कुण्डली में मांगलिक योग नहीं है

मांगलिक योग को सबसे पहले लग्न कुन्डली से देखा जाता है पर इसे चन्द्र तथा शुक्र कुण्डली से भी देखते हैं. यदि मंगल योग लग्न कुण्डली मे नहीं बन रहा है या मंगल योग का परिहार हो रहा है तो खुद को मांगलिक योग से मुक्त समझना चाहिये.

अगर लग्न कुण्डली में मांगलिक योग हो तो चन्द्र तथा शुक्र कुण्डली में भी देखिये, इन कुण्डली में मांगलिक योग की उपस्थिति या अनुपस्थिति मांगलिक योग की तीव्रता दर्शाती है. अगर लग्न कुण्डली में मांगलिक योग न हो लेकिन चन्द्र या शुक्र कुण्डली में हो तो भी उसका उतना प्रभाव प्रबल नहीं होता.

अगर आपकी कुण्डली में कोई भी ऐसा योग बन रहा हो जिससे मांगलिक योग का परिहार हो रहा हो तो मांगलिक योग आपके ऊपर प्रभावी नहीं होगा.

मांगलिक योग विश्लेषण व उपाय

मांगलिक योग और आप

सुखमय वैवाहिक जीवन की कामना सभी करते हैं. यही कारण है कि विवाह के प्रसंग में कुण्डली मिलायी जाती है. कुण्डली में अगर मांगलिक योग हो तो गुण मिलान में 25 से ऊपर भी गुण मिलते हों तो वैवाहिक जीवन के सुख के विषय में आशंका बनी रहती है. यही कारण है कि वर्तमान समय में विवाह के विषय में इस योग का विशेष रूप से विचार किया जाता है. कुण्डली में मांगलिक योग का आंकलन करने के लिए सामान्यतया लग्न कुण्डली से विचार किया जाता है हालांकि लग्न कुण्डली के अलावा चन्द्र कुण्डली तथा शुक्र कुण्डली से भी इस योग का आंकलन होता है.

मांगलिक योग का विचार विशेष रूप से विवाह के संदर्भ में होता है. मांगलिक दोष को कुज दोष के नाम से भी जाना जाता है. उत्तर भारतीय ज्योतिष पद्धति के अनुसार जन्म कुण्डली में मंगल अगर पहले, चौथे, सातवे, आठवें अथवा बारहवे घर में होता है तो यह मांगलिक योग माना जाता है. मांगलिक दोष को ज्योतिषशास्त्र में वैवाहिक जीवन के लिए कष्टकारी बताया गया है. जन्मपत्री मे यह दोष होने पर वर–वधू को दाम्पत्य जीवन में कई प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पडता है . यह योग विशेष रूप से वैवाहिक जीवन के सुखों में कमी लाता है.

आपकी कुण्डली में शुभ योगों के कारण मांगलिक दोष निष्क्रिय है

आपकी कुण्डली में मंगल एक ऐसी राशि में स्थित है जिसमें उसका प्रभाव शुभ होगा. मेष, वृश्चिक या मकर, इन राशियों में होने पर मंगल का मांगलिक योग निष्प्रभावी हो जाता है.

शुभ योगों के कारण आपका मांगलिक योग निष्क्रिय है इसलिये इससे होने वाले दुष्प्रभावों से आप मुक्त होंगे. आपके लिये मांगलिक व्यक्ति से ही विवाह करना अनिवार्य नहीं है. अगर आप मंगल योग के लिये की जाने वाले उपायों का भी उपयोग करें तो मंगल को अपने अनुकूल कर सकते हैं.

लग्न कुण्डली में मंगल कि स्थिति

आपकी कुण्डली मे मंगल तीसरे घर मे है. इस घर मे मंगल होने से आप मांगलिक नही है. तीसरे घर से मित्र ,छोटे–भाई, बहन, पराक्रम, यात्रा व जीवनसाथी के भाग्य को देखा जाता है. तीसरा घर मंगल की स्थिति के अनुसार सबसे प्रिय घर है. इसका कारण है मंगल इस घर का कारक है (अर्थात इस घर के सुख मंगल से देखे जाते हैं). यहां से मंगल अपनी चतुर्थ दृष्टि से छठे घर को देखता है. मंगल इस घर मे अपना शुभ प्रभाव देता है. मंगल की दृष्टि छठे घर मे होने से शत्रु कमज़ोर होते है. इस घर में बैठा मंगल आजीविका मे शुभ फल देता है तथा मित्रो से सहयोग एवं सुख प्रदान करता है.

मंगल की लग्न कुण्डली में स्थिति के उपाय

माता के स्वास्थ्य में सुधार के लिए चन्द्र को सूर्योदय के 2 घंटे के अंदर जल देना चाहिए. इससे आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी.

लग्न का प्रभाव

कन्या लग्न मे प्रथम, चतुर्थ या सप्तम घर मे ही मांगलिक योग का निर्माण होता है. आपका जन्म लग्न कन्या है, इस लग्न मे मंगल अपने अशुभ प्रभाव मे कुछ कमी करता है और अष्टम व द्वादश घर को मांगलिक योग से पीड़ित नहीं करता है.

लग्न और मंगल का संबंध

आपका जन्म कन्या लग्न में हुआ है और मंगल तीसरे घर में वृश्चिक राशि में स्थित है. तीसरे घर में स्वराशि में मंगल होने के कारण आप पराक्रमी और साहसी होंगे जिसके कारण जीवन में आने वाली चुनौतियों का मुकाबला धैर्य पूर्वक करेंगे. परंतु, मंगल की इस स्थिति के कारण आपको भाई–बहनों से मिलने वाले सुखों में कमी महसूस होगी क्योंकि मंगल आपकी कुण्डली में आठवें घर का स्वामी है परंतु तीसरे घर से मंगल की चौथी दृष्टि छठे घर पर होने के कारण आपके लिए अच्छी बात यह है कि आपको शत्रुओं का भय नहीं रहेगा.

भाग्य स्थान यानी नवम गृह पर मंगल की सातवीं दृष्टि होने के कारण धर्म एवं अध्यात्म में आप बहुत अधिक विश्वास नहीं करेंगे. इसी दृष्टि प्रभाव के कारण आप कर्म प्रधान व्यक्ति होंगे और भाग्य की अपेक्षा आपको कर्म का फल मिलेगा. ऐसे में आपको जीवन में सफलता पाने के लिए भाग्य के भरोसे नहीं बैठना चाहिए बल्कि परिश्रम को अपना संबल बनाना चाहिए.

आठवीं दृष्टि मंगल की दसवें घर पर होने का प्रभाव यह है कि आपको पिता से सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा. इस शुभ स्थिति का लाभ उठाने के लिए आपको पिता जी को आदर व सम्मान देना चाहिए एवं उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए. पिता से सुख के विषय में जहां मंगल की यह दृष्टि शुभकारी है वहीं सरकारी क्षेत्र से सम्बन्धित कार्यों में बाधाकारक है अतः सरकार से सम्बन्धित कार्यों में सफलता पाने के लिए आपको विशेष प्रयास करना होगा.

पुरुषों पर मंगल का प्रभाव

आपकी कुण्डकी मे मंगल तीसरे घर मे है, इस घर मे मंगल होने से आप दूसरों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं एवं अपने लिए सदैव सपने बुनते रहते हैं. तीसरे घर में मंगल की उपस्थिति के कारण आपको चन्द्र, सूर्य और गुरू का शुभ प्रभाव मिल रहा है जिसके कारण माता, पिता एवं गुरूओं से आपके अच्छे सम्बन्ध होंगे. आप अगर नेक बनकर रहेंगे तो मंगल आपको इस भाव से सम्बन्धित सभी प्रकार का सुख देगा अर्थात आप पराक्रमी होंगे. आपको मित्रों एवं भाईयों से लाभ मिलेगा. संतान से सुख प्राप्त होगा.

आपके लिये उपाय

ताऊ की सेवा करें या घर में हाथी दांत की वस्तु रखें.

मांगलिक योग के लिये उपाय

मांगलिक योग का प्रभाव बहुत गहरा और कष्टकारी होता है पर उपायो से इनके अशुभ फलो को कम किया जा सकता है. सामान्य से उपाय हमारे जीवन मे शुभता लाने मे कई बार बडे कारगर साबित

होते है. ये उपाय जीवन मे अशुभता न होने पर भी किये जा सकते है. इन उपायो को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाये. इन उपायो को करने के लिए आपको किसी शुभ समय या विशेष विधि कि आवश्यकता नही है. आप इन्हे कभी भी कर सकते है

बडे–बुजुर्गो के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करने से शुभ फलों मे वृद्धि होती है.

बहन–बेटी को मीठी वस्तुएं उपहार स्वरुप दे.

कन्याओ की सेवा करे तथा उन्हे हरे रंग के वस्त्र, उत्तम भोजन देकर प्रसन्न करे.

गाय, कुत्ता, कौआ ,बंदर आदि जीवो को भोजन अवश्य दे.

विकलांगो को भोजन करायें और उनकी हर संभव सहायता करें.

संयुक्त परिवार मे रहे.

ससुराल से सदैव बनाकर रखे.

देवी–देवताओ की पूजा, उपासना करें एवं उनके प्रति आस्था रखें.

ईश्वर पर सदैव भरोसा करे.

परिवार के सदस्यो का उचित प्रकार से पालन–पोषण करे.

किसी के भी साथ क्रूर व्यवहार न करे.

मांस व मछली न खाएं तथा न शराब का सेवन नहीं करें.

मुफ्त मे किसी से कोई भी वस्तु न ले.

निःसंतान व्यक्ति की संपति न ले.

झूठ न बोले और न ही झूठी गवाही दे.

सही ढग के वस्त्र पहने.

नाक को सदैव साफ रखे.

नाक व कान छिदवाएं.

दांतो को सदैव साफ रखें तथा कीकर की दातून करे.

बडे भाई की सेवा करे.

दान द्वारा उपाय

रक्तदान, रक्तचन्दन, मसूर, गेहू, लाल बैल, भूमि, मूँगा, गुड, रक्तवस्त्र, स्वर्ण, ताम्र, केसर, कस्तूरी, शुभ कर्मों में धन का दान मंगलवार के दिन दोपहर में करना चाहिए. अन्य लाल वस्तुओं का दान भी किया जा सकता है.

व्रत के द्वारा उपाय

मंगल के दोष को कम करने के लिए मंगलवार के दिन व्रत रखना भी अच्छा उपाय है, जिसके फलदायक परिणाम सामने आते है.

प्रत्येक मंगलवार या कम से कम मास मे एक मंगलवार का व्रत विधिपूर्वक करना शुभ होता है. मंगल के व्रत में नमक का त्याग पूरी तरह से करना आवश्यक है. पूरे दिन उपवास रखकर सायंकाल मे यथासंभव भोजन किसी परिजन के साथ करना लाभदायक रहता है. भोजन मे मीठा चूरमा, दही, चीनी, मिठाई, गुड, मिसरी या परांठा खाकर व्रत खोला जाता है. परिजन न होने पर एक व्यक्ति का भोजन किसी पण्डित को 11 या 21 रुपये रखकर दान देना चाहिए.

व्रत मे भोजन एक ही बार करना उचित होता है.

मंत्रो द्वारा उपाय

मंगल के लिये वैदिक मंत्र

ऊँ भौ भौमाय नमः या ऊँ मं मंगलाय नमः

मंगल के लिये तांत्रिक मंत्र

ऊं क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

इन मंत्रो का जप 24000 बार करने से मंगली दोष काफी कम हो जाता है.

रत्न द्वारा उपाय

मांगलिक यागे को कम करने के लिए मूंगा धारण करना चाहिए. मूंगा विधिपूर्वक धारण करने से शुभ फल प्राप्त होता है. इसकी विधि निम्न है.
12.5 रत्ती से अधिक का देशी मूंगा चाँदी या सोने की अंगूठी मे दाहिने या बाये हाथ की अनामिका में मंगलवार के दिन प्रातःकाल सूर्योदय के 48 मिनट के भीतर अभिमंत्रित करके धारण करना चाहिए.
सोमवार की रात को मूंगे की अंगूठी को गाय के कच्चे दूध, गंगाजल, शहद, घी, दही मे रखना चाहिए. प्रातःकाल इसमे से अंगूठी निकालकर शुद्ध जल तथा पुनः गंगाजल से अच्छी तरह से धो लेनी चाहिए.

तत्पश्चात मंगल के वैदिक मंत्र या तांत्रिक मंत्र से अंगूठी को अभिमंत्रित करना चाहिए.

पूजा स्थल पर बैठकर एक बर्तन मे अंगूठी रख ले. तत्पश्चात बायें हाथ मे माला लेकर किसी पात्र द्वारा दाहिने हाथ मे जल ले. मंगल के मंत्र का एक बार उच्चारण करें तथा वह जल अंगूठी पर डाले. इसी तरह से 10 माला अर्थात एक हजार मंत्र द्वारा मूंगे की अंगूठी को मंगल के मंत्र से अभिमंत्रित करे. इस के बाद इसका पूजन करे. पूजा के बाद दाहिने हाथ में अंगूठी लेकर मस्तक से अंगूठी का स्पर्श करके फिर अनामिका मे धारण करें. कुण्डली मे मंगल बायी ओर होने पर अंगूठी दाहिनी हाथ मे अनामिका मे पहने तथा दाई ओर मंगल होने पर बाई हाथ की अनामिका मे पहने.

समय–समय पर अंगूठी को उतारना नही चाहिए.

वास्तु के द्वारा उपाय

अपने निवास स्थान को लाल, गुलाबी, कत्थई, मैरुन रंग से सजाए. बिस्तर, तकिये का गिलाफ तथा शयनगृह की रोशनी भी इन्ही रंगो की होनी चाहिए. जिन खाद्य पदार्थों मे रक्तवर्द्धक तथा विटामिन ए, बी, सी, डी, ई अधिक मात्रा मे पाया जाता है उसका सेवन विशेष रुप से करना चाहिए.